यह मृत्यु उपत्यका
नहीं है मेरा देश

यह मृत्यु उपत्यका नहीं है मेरा देश

नवारुण भट्टाचार्य

अनुवाद
प्रमोद कुमार सिन्हा
मंगलेश डबराल
संदीपराय चौधरी



राधाकृष्ण

पहला हिन्दी संस्करण
1985

मूल्य
25 रुपये

प्रकाशक
राधाकृष्ण प्रकाशन
2/38 अंसारी रोड, दरियागंज
नयी दिल्ली-110002

मुद्रक
नागरी प्रिण्टर्स
नवीन शाहदरा
दिल्ली-110032

बाबा और माँ
बिजोन भट्टाचार्य और महाश्वेता देवी
को

सूची

यह मृत्यु उपत्यका नहीं है मेरा देश

जो पिता अपने बेटे की लाश की शिनाख्त करने से डरे
मुझे घृणा है उससे
जो भाई अब भी निर्लज्ज और सहज है
मुझे घृणा है उससे
जो शिक्षक, बुद्धिजीवी, कवि, किरानी
दिन-दहाड़े हुई इस हत्या का
प्रतिशोध नहीं चाहता
मुझे घृणा है उससे

चेतना की बाट जोह रहे है आठ शव
मैं हतप्रभ हुआ जा रहा हूँ
आठ जोड़ा खुली आँखें मुझे घूरती हैं नीद मे
मैं चीख उठता हूँ
वे मुझे बुलाती हैं समय-असमय, बाग मे
मैं पागल हो जाऊंगा
आत्महत्या कर लूंगा
जो मन मे आये करूँगा

यही समय है कविता लिखने का
इश्तहार पर, दीवार पर, स्टेंसिल पर

अपने ख़ून से, आँसुओं से, हड्डियों से कोलाज शैली में
अभी लिखी जा सकती है कविता
तीव्रतम यंत्रणा से क्षत-विक्षत मुंह से
आतंक के रू-ब-रू वैन की झुलसाने वाली हेड लाइट पर आँखें गड़ाये
अभी फेंकी जा सकती है कविता
38 बोर पिस्तौल या और जो कुछ हो हत्यारों के पास
उस सब को दरकिनार कर
अभी पढ़ी जा सकती है कविता

लॉक-अप के पथरीले हिमकक्ष में
चीरफाड़ के लिए जलाये हुए पेट्रोमैक्स की रोशनी को कँपाते हुए
हत्यारों द्वारा संचालित न्यायालय में
झूठ अशिक्षा के विद्यालय में
शोषण और त्रास के राजतंत्र के भीतर
सामरिक-असामरिक कर्णधारों के सीने में
कविता का प्रतिवाद गूंजने दो
बांग्लादेश के कवि भी तैयार रहें लोर्का की तरह
दम घोंट कर हत्या हो लाश गुम जाये
स्टेनगन की गोलियों से बदन सिल जाये—तैयार रहें
तब भी कविता के गाँवों से
कविता के शहर को घेरना बहुत जरूरी है

यह मृत्यु उपत्यका नहीं है मेरा देश
यह जल्लादों का उल्लास-मंच नहीं है मेरा देश
यह विस्तीर्ण श्मशान नहीं है मेरा देश
यह रक्तरंजित कसाईघर नहीं है मेरा देश

मैं छीन लाऊँगा अपने देश को

सीने में छिपा लूँगा कुहासे से भीगी कांस-संध्या और विसर्जन
शरीर के चारों आर जुगनुओं की कतार
या पहाड़-पहाड़ झूम खेती
अनगिनत हृदय, हरियाली, रूपकथा, फूल-नारी-नदी
एक-एक तारे का नाम दूंगा हर शहीद के नाम पर
स्वेच्छा से बुला लूंगा
डोलती हुई हवा, धूप के नीचे चमकती मछली की आंख जैसा ताल
प्रेम जिससे मैं जन्म से छिटका हूँ कई प्रकाश-वर्ष दूर
उसे भी बुला लाऊँगा पास क्रांति के उत्सव के दिन।

हज़ारों वाट की चमकती रोशनी आँखों में फेंककर रात-दिन जिरह
नहीं मानती
नाख़ूनों में सुई   बर्फ़ की सिल पर लिटाना
नहीं मानती
नाक से ख़ून बहने तक उल्टे लटकाना
नहीं मानती
होंठों पर बट   दहकती सलाख़ से शरीर दाग़ना
नहीं मानती
धारदार चाबुक से क्षत-विक्षत लहूलुहान पीठ पर सहसा एल्कोहल
नहीं मानती
नग्न देह पर इलेक्ट्रिक शॉक   कुत्सित विकृत यौन अत्याचार
नहीं मानती
पीट-पीट कर हत्या   कनपटी से रिवाल्वर सटाकर गोली मारना
नहीं मानती
कविता नहीं मानती किसी बाधा को
कविता सशस्त्र है   कविता स्वाधीन है   कविता निर्भीक है
ग़ौर से देखो : मायकोव्स्की, हिकमत, नेरुदा, अरागाँ, एलुआर
हमने तुम्हारी कविता को हारने नहीं दिया

समूचा देश मिलकर एक नया महाकाव्य लिखने की कोशिश में है
छापामार छंदों में रचे जा रहे हैं सारे अलंकार

गरज उठें दल मादल
प्रवाल द्वीपों जैसे आदिवासी गांव
रक्त से लाल-नीले खेत
शंखचूड़ के विष-फेन से आहत तितास
विषाक्त मरणासन्न प्यास से भरा कुचिला
टंकार में अंधा सूर्य उठे हुए गांडीव की प्रत्यंचा
तीक्ष्ण तीर, हिंसक नोक
भाला, तोमर, टांगी और कुठार
चमकते बल्लम, चरागाह दखल करते तीरों की बौछार
मादल की हर ताल पर लाल आँखों के ट्राइबल-टोटम
बंदूक़ दो खुखरी दो और ढेर सारा साहस
इतना साहस कि फिर कभी डर न लगे
कितने ही हों क्रेन, दाँतों वाले बुलडोजर, फौजी कन्वाय का जुलूस
डायनमो-चालित टरबाइन, खराद और इंजन
ध्वस्त कोयले के मीथेन अंधकार में सख़्त हीरे की तरह चमकती आँखें
अद्भुत इस्पात की हथौड़ी
बंदरगाहों जूटमिलों की भट्ठियों जैसे आकाश में उठे सैकड़ों हाथ
नहीं—कोई डर नहीं
डर का फ़क पड़ा चेहरा कैसा अजनबी लगता है
जब जानता हूँ मृत्यु कुछ नहीं है प्यार के अलावा
हत्या होने पर मैं
बंगाल की सारी मिट्टी के दियों में लौ बनकर फैल जाऊँगा
साल-दर-साल मिट्टी में हरा विश्वास बन कर लौटूंगा
मेरा विनाश नहीं
सुख में रहूँगा दुख में रहूँगा, जन्म पर सत्कार पर
जितने दिन बंगाल रहेगा मनुष्य भी रहेगा

जो मृत्यु रात की ठंड में जलती बुदबुदाहट होकर उभरती है
वह दिन वह युद्ध वह मृत्यु लाओ
रोक दें सेवेंथ फ्लीट को सात नावों वाले मधुकर
शृंग और शंख बजाकर युद्ध की घोषणा हो
रक्त की गंध लेकर हवा जब उन्मत्त हो
जल उठे कविता विस्फोटक बारूद की मिट्टी—
अल्पना-गांव-नौकाएँ-नगर-मंदिर
तराई से सुंदरवन की सीमा जब
सारी रात रोने के बाद शुष्क ज्वलंत हो उठी हो
जब जन्मस्थल की मिट्टी और वधस्थल की कीचड़ एक हो गयी हो
तब फिर दुविधा क्यों ?

संशय कैसा ?

त्रास क्यों ?

आठ जन स्पर्श कर रहे हैं
ग्रहण के अंधकार में फुसफुसा कर कहते हैं

कब कहाँ कैसा पहरा

उनके कंठ में हैं असंख्य तारापुंज-छायापथ-समुद्र
एक ग्रह से दूसरे ग्रह तक आने-जाने का उत्तराधिकार

कविता की ज्वलंत मशाल
कविता का मोलोतोव कॉकटेल
कविता की टॉलविन अग्नि-शिखा
आहुति दें अग्नि की इस आकांक्षा में।

एक चिनगारी के लिए

किसी बात की चिनगारी उड़कर
कब पड़ेगी सूखी घास पर
सारा शहर उथल-पुथल, भीषण क्रोध में होगा युद्ध
ठुड्डी कट जायेगी   फटेगी छाती
लगाम छीनकर दौड़ पड़ेगा नाटक
सूखे कुएं में   कूदेगा सुख
सपने बंद हैं क़ैदखाने में
कोई व्यथा की बारिश कब बींधेगी मधुमक्खी के छत्ते को
सारा शहर रक्त-लहर   आशाओं को मिटाता युद्ध
टूटेंगे मुखोश   आग्नेय रोष में
आग जले और गुड़िया नाचे
सलाख़ें टूटेंगी   अदम्य साहस
कई-कई छवियां   टुकड़े-टुकड़े कांच में
कब खिलेगी कली बारूद की गंध से उन्मत्त
सारा शहर उथल-पुथल भीषण क्रोध में होगा युद्ध।

लुंपेन का गीत

हर रात हमारे जुए में
कोई न कोई जीत लेता है चांद
चांद को तुड़वाकर हम खुदरे तारे बना लेते हैं

हमारी जेबें फटी हैं
उन्हीं छेदों से सारे तारे गिर जाते हैं
उड़कर चले जाते हैं आकाश में

तब नींद आती है हमारी ज़र्द आंखों में
स्वप्न के हिंडोले में हम कांपते हैं थरथर
हमें ढोते हुए चलती चली जाती है रात

रात जैसे एक पुलिस की गाड़ी
रात जैसे एक काली पुलिस की गाड़ी।

एक मृत्युगान

मैंने तो नहीं की भूल
वही लायी है फूल ।

कुछ टूटे पत्ते थे फूलों के साथ
फूल वाला बैठा था   थिगली वाला छाता
आँसुओं से भीग गये सर के बाल
मैंने तो नहीं की भूल
वही लायी है—फूल ।

फूल आये गाड़ी पर सवार
फूल आये मुंह करके बंद   फूलों में समा ग
फूल आए मरे-मरे   फूलों का पल्ला पकड़े
फूल आए ढँक गये मोम की गुड़िया को ।
मैंने तो नहीं की भूल
वही लायी है—फूल ।

पँखुरियाँ लिपटी थीं आग की लपटों में
सुगंध समाई थी तात बुनने की मशीन में

आग के पत्ते और लता   आग की आकुलता
छुआ ज्यों हो पिघल गयी मोम की गुड़िया
मैंने तो की नहीं भूल
वही ले आयी—फल।

वियतनाम पर कविता

मैंने सोच कर देखा है बहुत
आज इस सभा में
वियतनाम को लेकर कोई कविता
पढ़ना संभव नहीं है मेरे लिए
यह काम कठिन है बहुत
दिखने में कैसी होगी वह कविता
क्या होगा उसके हाथों में
वह अंधेरे में देख पाएगी कि नहीं
कितने दिन रहना पड़ा उसे जेल में
मैं उसके बारे में कुछ भी
तय नहीं कर पा रहा

तमाम शब्द बेहद लहूलुहान हैं   असंभव बेचैन
तिस पर अनेक तो झुलस गए हैं नापाम से
कुछ शब्द पागल और कुछ स्याह पड़ गए हैं
किसी शब्द को तो हाथ बाँध कर
फेंक दिया गया है हेलिकॉप्टर से
तब भी, इन शब्दों को न जुटाएं तो
नहीं होगी वियतनाम की कविता

शब्द मेरे लिए नहीं हैं चुइंग-गम
मृत बुद्धिजीवियों के टेलिफ़ोन नंबर
नहीं हैं मोनोपलि दैनिक के अशिक्षित
संपादक को ख़ुश करने वाले प्रसाधन या पासपोर्ट
इन शब्दों को मैं हथगोले की तरह
फेंकना चाहता हूँ साम्राज्यवादी कैबरे के बीच
इन शब्दों को मैं
बाँट सकता हूँ सड़क के बच्चों में
सेब और बिस्किट की तरह
लेकिन शब्दों का हो रहा है विस्फोट मेरी हथेली में
नहीं लिख पा रहा हूँ मैं

इतनी सी बात जानता हूँ
एक झूठी कविता जितना झूठ बोल सकती है
संयुक्त राष्ट्र अमेरिका का राष्ट्रपति भी उतना नहीं बोल सकता
लेकिन एक सच्ची कविता
सोते हुए बच्चे को हवाई हमले से
बचाये रखती है सारी रात

वियतनाम पर कविता
सारी पृथ्वी को मिलाकर लिखनी होगी
उसी अंतर्राष्ट्रीय प्रयास में
प्रस्तुत हूँ मैं अपने हिस्सेदारी को
उस कविता को लिखने में
इस्तेमाल होगा
ब्लास्ट फ़र्नेस, रॉकेट, ट्रैक्टर और पियानो का

ठीक है फिर, लिखी जाये वह कविता

आप लोग आयें
(पर मुझे नहीं दिख रहा कोई मजदूर या किसान)
जो यहाँ नहीं हैं वे भी आयें
बहुत से प्रेम, बहुत सी बारूद, बहुत से क्रंदनों से ही
लिखी जा सकती है वह अद्‌भुत कविता
मैं थोड़ा-सा ही सोच सकता हूँ
उस कविता की बात

धू-धू जल रहे हैं कविता के शब्द
तेज हवा में झंडे की तरह उड़ रही है मेरी कविता
और राख हुआ जा रहा है पेंटागन
फ़ासिस्टों के कुत्सित चेहरे
चेज़, मैनहटन बैंक
चीले, रोडेसिया, दक्षिण कोरिया के कारागार
और उस अद्‌भुत उजाले में
असंख्य मनुष्यों के उत्सव के बीच
पृथ्वी के सारे संगीन
हो ची मिन्ह नगर बन गये हैं

उस मुक्त नगर में
सबसे पहले जो जीप प्रवेश कर रही है
उसमें बैठे हैं,कई सारे बच्चे
एक झंडा उड़ रहा है तारों वाला
—उनके हाथों में हैं सब मशीन-गन
देखने में बहुत कुछ ऐसी ही होगी
वियतनाम पर लिखी हुई
हम लोगों की वह अद्‌भुत कविता।

सर्कस की बीमारी

अपार आनंद आ रहा है, डॉक्टर
फ़िलहाल पूरी तरह स्वस्थ
दो बरस पहले शायद सर्दियों में
शहर में आया था सर्कस
इस बार सीने के भीतर शुरू है सर्कस
कुचले हुए होठों के बीच नमकीन ख़ून
जोकर ! जोकर !
अपार आनंद आ रहा है डॉक्टर !

ख़ून में जैसे कहीं कोई तार टूट जाने से
दम घुटकर थम जाती है ट्राम
उसकी तीनों आँखें बुझ जाती हैं चीख़ती हैं
मस्तिष्क में कहीं कोई स्नायु टूटती है
बेवक़्त बिजली के लट्टू के भीतर
टूटे फ़िलामेंट की तरह काँपती है
भाग्यवान हो पकड़ा जा सकता है
उड़ते हुए ट्रैपीज़ में
उसके बाद ?
फ़िलहाल पूरी तरह स्वस्थ।

डॉक्टर ! आपके चारों तरफ़
छितराये हुए हैं इधर-उधर
बच्चों के अस्पताल में बम गिरने के बाद
खून से लिथड़े हुए कपड़े
मूक बधिर स्कूलों जैसी निस्तब्धता में
ख़ुद का जीवित रहना ही
लगा था कमांडो तत्परता की तरह
अब ऐसा नहीं लगेगा कभी
फ़िलहाल पूरी तरह स्वस्थ ।

इस बीच ख़ून जम कर रोक देता है रास्ता
कार्डियोग्राम की तरह रेखांकित चेतना के स्रोत में
डॉक्टर, वह भीषण आवेश !
खुद के भेजे हुए एस ओ एस
आईनों के धक्के खाकर अपने ही
शरीर में लौट आते हैं
डॉक्टर, बेहद मजा है सदियों के सर्कस में ।

लाशघर की मेज पर भी जमा हुआ है ख़ून
और उससे चिपकी मक्खियों जैसे पूरे आराम से
मेरे असंख्य होंठ नियोन से झुलसे हुए
उतरते चले जाते हैं
शहर के ललाट की तरफ़
हाल्ट ! हठात्, ब्रेक से या डर से रुक जाती है ट्राम
चौंककर लुढ़कते हैं चौराहे के मोड़ पर
निहत्थी ट्रैफिक पुलिस के खड़े होने के भ्रम
डॉक्टर ?
फ़िलहाल पूरी तरह स्वस्थ

कुचले हुए होठों के बीच ख़ून का नमक
जोकर ! जोकर !
फ़िलहाल पूरी तरह स्वस्थ
दो बरस पहले शायद सर्दियों में
शहर में आया था सर्कस
इस बार सीने में शुरू है सर्कस।

मेरी ख़बर

मैं वही आदमी हूँ
जिसके कंधे पर डूबेगा सूरज
सीने पर बटन नहीं हैं कई रातों से
धूल-भरे खड़े कालर   झूलती हुई आस्तीनें
हवा में उड़ते हुए बाल
जेब से अधजली सिगरेट निकालकर कहूँगा
दादा, ज़रा माचिस देंगे ?
आदमी अगर शरीफ़ हुआ
तो हाथ में सिगरेट लिये हुए
माचिस बढ़ायेगा आगे
मैं उसकी हाथ घड़ी को ताकूँगा
आँखों में जल उठेगा रेडियम
मैंने तुझसे मुहब्बत करके सनम—लेन-देन

अख़बार में नहीं
पुलिस रोजनामचे में मेरी
दो तस्वीरें होंगी—एक हँसता चेहरा, एक साइड फ़ेस
और नीचे लिखा होगा—स्नैच केस

पेट-भर पेट्रोल पीकर
हल्लागाड़ी दौड़ेगी मेरी खोज में
सर झुकाए शहर मुझे तलाश करेगा
मैं वही आदमी हूं
सीने पर बटन नहीं हैं कई रातों से
जिसके कंधे पर डूबेगा सूरज।

आख़िरी इच्छा

मेरे मरने पर
रो-रोकर टूट पड़ेगा वह घर
जो मैंने तैयार किया है शब्दों से
कोई आश्चर्य की बात नहीं है यह

घर का आईना मुझे पोंछ देगा
दीवार नही ढोयेगी मेरी तस्वीर
मुझे अच्छी भी नहीं लगती थी दीवार
फिर आसमान ही मेरी दीवार होगी
उसी पर चिड़ियाँ चिमनी के धुँए से
लिखेंगी मेरा नाम
या फिर आसमान मेरे लिखने की मेज़ होगा
ठंढा पेपरवेट होगा चाँद
काले मख़मल के पिनकुशन पर खुँसे होंगे तारे

मुझे याद करते हुए
तुम्हें दुखी होने की कोई ज़रूरत नहीं

यह सब लिखते हुए नहीं कांप रहे हैं मेरे हाथ
पर जब पहली बार छुआ था तुम्हारा हाथ
मेरे हाथ कांपे थे थरथर
कुछ आवेग से कुछ संकोच से

मेरी सुंदर पत्नी मेरी प्रिया
तुम्हें घेरे रहेगी मेरी स्मृति
लेकिन तुम्हें उसे जकड़ कर रखने की कोई जरूरत नहीं
ख़ुद ही बनाना तुम अपना जीवन
तुम्हारी कॉमरेड है मेरी स्मृति
अगर किसी से प्रेम करो तुम
उसे दे डालना ये सारी स्मृतियां
उसे बना लेना कॉमरेड
यों मैं सब कुछ छोड़ता हूँ तुम्हारे ही ऊपर
मुझे विश्वास है तुम नहीं करोगी भूल

मेरे बच्चे को
पहला अक्षर सिखलाते हुए
सिखलाना मनुष्य, धूप और तारों से प्यार करना
वह हल कर लेगा कठिन से कठिन गणित
क्रांति का एलजेबरा वह सीख लेगा
मुझसे भी बेहतर
सिखाएगा चलना जुलूस में
पथरीली जमीन और घास पर
उसे बतलाना मेरे दुर्गुणों की बाबत
पर वह मुझे भला-बुरा न कहे
कोई बड़ी बात नहीं मेरा मर जाना
नहीं रहूँगा मैं ज्यादा दिन

यह जानता था मैं
पर मेरा यह विश्वास नहीं टूटा कभी
कि सारी मृत्यु को लाँघकर
समस्त अंधकार को अस्वीकार कर
क्रांति हो गयी है दीर्घजीवी
क्रांति हो गयी है चिरजीवी ।

मुझे चाहिए एक मोटर गाड़ी

तीस हज़ार लोग डूब उतरा रहे हैं
नमकीन पानी के धक्कों से उनके नाक-मुँह से ख़ून बह रहा है
इसीलिए मुझे चाहिए एक मोटरगाड़ी
लोड शेडिंग से रेफ्रिजरेटर की बर्फ़ पिघल रही है
लाशघर में शवों के चौतरफ़ बर्फ़ पिघल रही है
सतर्क रहिए हरी छिपकली की तरह
वसंत आ रहा है
लेकिन मुझे चाहिए एक मोटरगाड़ी।

संवेदनहीन नवंबर में पंखा बंद कर दिया है
विंटर पैलेस ने क़ब्ज़ा कर लिया है मुझ पर
बढ़ रहा है कोलेस्ट्रॉल, वमन, बुलेट का बारूद
मोमबत्ती नहीं है तो एक हरिजन को जला दो
पकड़कर
तब भी मुझे चाहिए एक मोटरगाड़ी।

रेशमी सूरज के पैराशूट के झूले से
एक दिन ईश्वर पधारेंगे कलकत्ता

मेरे, मेरी बीवी और मेरे बच्चे के सर पर
और जितने भी झुके हुए माथे हैं—छिन्न-भिन्न
सब पर झरेगी करुणा की परमाणविक भस्म
भाई, मुझे चाहिए एक मोटरगाड़ी।

कॉमरेड, मुझे चाहिए एक मोटरगाड़ी
महोदय, मुझे चाहिए एक मोटरगाड़ी
झकाझक, रंगीचुगी, ज़ोरदार एक मोटरगाड़ी।

इस मोटरगाड़ी के पहिये के नीचे
मज्जा और रक्त के छितर जाने की
उम्मीद करती है मेरी नियति।

नील

मैं हूँ तेरा सहज शुभाकांक्षी, नील
गिद्ध की चोंच और नाख़ूनों ने जिसे दिया था नोच
कलेजे में खिलते हैं प्रतिहिंसा के फूल
रक्त और स्मृति के बीच मैं ज़रूर ढूंढ़ लूंगा कोई मेल
मैं हूं तेरा सहज शुभाकांक्षी, नील।

छुई जा सकती है बारूद की तरह मेरे देश की रात
नील ने देखी थी वह आश्चर्य-रात
छुई थीं सड़ेगले लोगों की आँखें असंख्य
प्रचंड लहरों ने सीने में जकड़ा था वह शव
बर्छी की नोक जैसी तीखी हवा में
तुम्हें फिर से छू लूंगा, नील।

नील, मैं छुए हुए हूं मस्तकविहीन स्वदेश का कबंध
छुए हूँ धान, मृत्यु, जन्म, क्रोध, खेत
नील, मैं छुए हूँ आदिवासी धनुषों की डोर
नील, तेरे स्पर्श से हुआ हूँ मैं नीला रक्तमुख।

सियार के दाँतों-नाख़ूनों ने चींथ दिया था उसे
कलेजे में खिलते हैं प्रतिहिंसा के फूल
रक्त और स्मृति के बीच ज़रूर ढूँढ़ लूँगा कोई मेल
मैं हूँ तेरा सहज शुभाकांक्षी, नील।

बुरा वक़्त

बुरा वक़्त कभी अकेले नहीं आता
उसके संग-संग आती है पुलिस
उसके बूटों का रंग काला है
बुरा वक़्त आने पर
हँसी पोंछ देनी पड़ती है रूमाल से
पंखुड़ियाँ धूल हो जाती हैं
जुए का बाज़ार फूलता जाता है मरे हुए जानवर की तरह
प्रेम की गर्दन जकड़ कर
डर झूलता रहता है
अभागे लोग लटकते हैं लैंपपोस्ट से
गले में रस्सी डालकर
उनके साए में लुकाछिपी खेलते हैं कालाबाज़ारिये
सड़कों पर किलबिलाते हैं
वी डी, वेश्यायों के दलाल और जेम्स बांड
भीड़ को ढकेल कर सायरन बजाती हुई
पुलिस गाड़ी चली जाती है
उसमें बैठी होती है पुलिस
उनके बूटों का रंग उनके होठों की तरह काला है
उनकी घड़ी में बजता है
बुरा वक़्त।

कौन ?

सारी रात
चाँद के साबुन से
बादलों के झाग से सब कुछ ढँक कर
किसे गरज है
कि आकाश को धो दे ?

सारा दिन
सूरज की इस्त्री से
विशाल नीली चादर की
सलवटें ठीक कर दे
कौन उठाये यह ज़हमत ?

इसका जवाब जानते थे
कोपरनिकस
और जानती है
चार पहियों समेत पानी में डूबी
ब्रेकडाउन-बस ।

कुष्ठरोगी की कविता

मेरा यह कोढ़
क्या शहर कलकत्ता मिटा सकता है
जिसके हाइड्रेंट में पानी नहीं है ?
इसीलिए मैं निर्भय
रेडियम की धूल को चाट लेता हूँ
जीभ के झाड़न से
जिससे मेज़ झाड़ी जाती है
सदा चमचमाती रहती है
पता ही नहीं चलता
कि यह कोढ़ी की मेज़ है।

मेरी जमापूंजी है
बहुत मामूली कुछ छायापथ, तारे
साइकिल रिक्शे की टूटी चेन का चाबुक
जो मेरे हृदय को लहूलुहान करता है
और ख़ास गुप्त चीज़ हैं
कुछ नेप्थलीन के चाँद
जो पेशाबघरों से इकट्ठा करके मैंने

रख दिए हैं अपने बादलों की पोशाक की तहों में।

किसी अतल अलौकिक स्पर्श से
मेरा यह रोग छूट गया
तो मैं पेड़ के आईने में
अपनी हरी मायावी परछाईं फेंकूंगा
और उसी जंगल में
दिखूंगा चिता की तरह सुंदर।

पटकथा 1388*

एक कोठरी में लालटेन के काँपते उजाले में
दिखती है एक लड़की अपने ही कपड़े से गला बाँधकर
अकेले झूलती हुई
घर के कोनों में सिर्फ़ चूहों की खच-खच आवाज़ है
कीड़े-खाये बासी चावल चुराकर वे छिप जाते हैं बिल में
लड़की के जीवन का जो सत्त्व है वह भी मरता जाता है क्रमशः

क्या तुम्हें शर्म आती है अपने अस्तित्व की कंदरा में ?
वेश्याएँ ढोते इस शहर-बंदरगाह में क्या तुम डूबी जाती हो ?

ऐसे क्षण में इस झूलते हुए दृश्य के क़रीब
अचानक अगर रेडियो पर बज उठे मोहक राष्ट्रीय धुन
तो मानना होगा कि दोनों पाँव हवा में टिकाकर
यह लड़की राष्ट्र को दे रही है सम्मान
जैसे कि नंगे पैर स्कूली बच्चों से कहा जाता है

---

* 1388—बंगला वर्ष—अनु.

कि दुर्लभ पुण्य देता है गंदे नाले के पानी में स्नान
इस बीच झड़े बालों वाले कुछ बूढ़े चूहों का दल
फूले हुए पेट की बिल्लियों से करता है संभोग
वासना का खेल
इसी तरह कटते हैं दिन-रात काल-अकाल
मृत युवती झूलती है जम जाती है लालटेन पर कालिख
इससे तो लाख बेहतर था देशद्रोही कहलाकर
जल जाना

क्या तुम गुस्से में हो अपने अस्तित्व की कंदरा में
क्या तुम चाहती हो शहर, गाँव, बंदरगाह में युद्ध ?

ग्रहण

चुप,
अभी लगा है ग्रहण
इसीलिए सारा कुछ छाया से ढँका है
दूर चीनीमिट्टी के बर्तनों की दूकान
ठास्स—कप या प्लेट की चीत्कार
मोहेंजोदड़ों का वह मोतियाबिंद वाला सांड़
अचानक घुस आता है
सींग हिलाता हुआ
सहसा नाक पर घूँसा
मारकर सरक गई छाया
शैडो बॉक्सिंग !
चुंबन !
छाया की बनी औरत
उसकी कलाइयों में छाया की शंख-चूड़ियां*
छाया की छत से घूमता है
भौतिक छाया वाला पंखा

---

* बंगाल में शंख की बनी चूड़ियां सुहागिन होने का प्रतीक हैं जिन्हें विधवा होने पर सबसे पहले तोड़ा जाता है।—अनु.

छाया में बच्चा रोता है
उसके मुँह में दान में दिए स्तन
आसानी से ठूँस देते हैं
छाया से ढँके विदेशी मिशन।

वाह,
टेलीविजन पर छाया खेल करती है
उपछाया रातोंरात प्रच्छाया बन जाती है
छाया की खिड़की से हू-हू करता
छाया-चूर्ण घुसता है
कोई खिलखिलाता है कोई रो पड़ता है
छाया नामधारी किसी प्रेमिका की याद में!
पार्टनर!
पटवारी-नुमा बुद्धि छोड़कर अब धर्म में लगाओ मन।
भूमंडल पर फ़िलहाल है छाया का ग्रहण।

एक असाधारण कविता

मेरे प्रेम की ख़ातिर जिसने अपने को उत्सर्ग कर दिया था
वह लड़की अब आत्महत्या कर रही है।
और बूंद बूंद नीला पसीना है मेरे माथे पर
उसके लिए मैं एक गंभीर सार्थकता था
मेरी तरफ़ से कुछ प्रवंचना भी थी शायद
या उसने कभी समुद्र नहीं देखा था।
अब वह आत्महत्या कर रही है
उसकी उँगलियाँ, छिपा हुआ कोमल रक्त, चिट्टा गला
अब भी जीवित हैं
सिर्फ़ उसकी पलकें नहीं झपकतीं।
स्थिर सहमति की तरह अपलक आईने में
वह जीवित है अब भी
उसने कभी समुद्र नहीं देखा था।
हमारी एक साथ ही समुद्र तक जाने की बात थी
वह जीवित है अब भी
अब भी जाया जा सकता है शायद
नीले तुषारकण जैसा पसीना है मेरे माथे पर।
अब भी उसे सारी रात चूमा जा सकता है
यहाँ तक कि मृत्यु के बाद भी उसे चूमा जा सकता है सारी रात
नींद में वह बहुत सुंदर लगती थी

और चिरनिद्रा में एक नया ही सौंदर्य जन्मा है
पर वह जीवित है अब भी
सिर्फ़ उसकी पलकें नहीं झपकतीं।
उसकी उँगलियाँ दुविधा में काँप रही हैं और कोनों के
कई पत्थरों पर
कोमल रक्त जमा जा रहा है डर से
चिट्टे गले में साफ़ हवा और रात है
मैं इस लहर और झंझावात के विपत्ति-संकेत के सामने कुछ भी नहीं
इतने फेनिल और गहरे अंधेरे प्रवाल द्वीप के बीच
दरियाई घोड़े की चीख़ों के बीच
मेरे अपने होंठ मेरे ही लिए अपरिचित हैं।
एक अतल सार्थकता था मैं
मृत्यु, मृत, मरण जैसा
बूंद-बूंद नीले क्षण मेरे माथे पर।
मेरे प्रेम की ख़ातिर जिसने अपने को उत्सर्ग किया था
वह लड़की अब कर रही है आत्महत्या।

शंख और लोहे की चूड़ी
हवा में अगरू-गंध
घोंघे का टूटा खोल बेआवाज़ चीर देता है पैर
कीचड़ में ख़ून चूसता है फिर भी आवाज़ नहीं

आदमी चलता जाता है और उसे घेरे हुए
सारी रात तारे टूटते हैं
असल बात तो है ख़ुद को ऐसे ही खड़े रखना
कभी दिया बनकर या कभी मनौती की थाली बनकर
यह सब जानता है यह आदमी
जानता है कि खड़े रहने के लिए आगे रखने पड़ते हैं पैर
और पैर रखने से ही दिखती है दुनिया
उसके कष्ट लेकर मैं भी हो सकूं उसकी तरह अकेला

संतालादि, बेंडल एक-एक कर वृक्ष गये
एक निरीह आदमी अंधेरे में रखता है पैर।

सामंत की बंदूक ग़ायब

अद्‌भुत गोल चाँद के छद्‌म वेश में
रहस्यमय मिट्टी और तिनके, खस के इस मंडल में आकर
ओस-भीगी चिड़िया की चोंच पर कुहरे का स्पर्श दिया
जाओ, इस फूस के गट्‌ठर को लेकर चले जाओ
कुम्हारपट्टी नींद में अचेत है
सामंत की बंदूक ग़ायब

मटमैली नदी के हृदय को मटमैली धोवन लेकर
घोंघों और कछुओं की धारवाली नदी के पास जाकर
कहानी को बढ़ा-चढ़ाकर
अपार समुद्र बना दिया

हे समुद्र, समुद्र-आकाश
क्यों तुम्हें लगता है कि ये सारा घासें
मिट्टी में विंधे हुए भाले हैं
असंख्य लक्ष्य-भ्रष्ट तीर है
या शांत, डरे हुए, रात में सोते पक्षी है

ऐसे अँधेरे में स्तनवृंतों में उतरता है दूध
मैदान के बीच रोशनी लेकर आती है ट्रेन
बच्चे को नींद में ट्रेन की आवाज दूर चली जाने पर
सुदूर एक तारा चकराता हुआ टूटता है
कितने दहक रहे हैं उसके होंठ
जैसे कोठरी में किसी ने रखा हो बारूद
अभी जागने वाला है
चाँद के छद्मवेश में वह अद्भुत गोला
तुम उपवास के बाद का अन्नपिंड होना चाहते हो
चाँदनी में क्या कभी रेडियम होता है
—
सामंत की बंदूक गायब

माचिस की डिब्बी के मनुष्य

बारूद लपेटे हुए हैं उनके घरों की दीवारें
हल्के काठ की चरमराती नीची छत
यहां रहते हैं अनेक मनुष्य रक्तहीन, बुझे हुए
अर्थहीन और नितांत बरबाद।

उनके शरीर में रक्त है कि नही
यह सोचने का एक विषय है
वे बदकार हैं घोर काली रात
जकड़े हुए है उनके सर।

क्या जाने किस हताशाजनित क्रोध में
वे निकल आते है घर से बाहर   हड़बड़ाए हुए
हल्के काठ की नीची चरमराती छत से
सर छू जाने पर फिस-फिस हंस देते है।

वारूद लपेटे हैं उनके घरों की दीवारें
उन दीवारों से सर ठोंक कर पता नहीं क्या चाहते है वे
अर्थहीन और नितांत वरबाद
बुझी हुई ज्वाला में ख़ुद ही जल जाते हुए।

जुआरियों की नाव

देखी है जुआरियों की नाव तीन सवारियाँ लेकर
अशुभ आकर्षण मे भाग रही है काले पाल ताने हुए
लालटेन की मद्धिम रोशनी ढंक गयी है कालिख से
लटकी जा रही है औरत नग्न नर्तकी की आख़िरी रात हो जैसे
झाग उगलते मुंह को छूते हुए गिलास
तीनों के हाथों मे घूमते है ताश
छक्की के घूंघट में अवसन्न गणिका का गायन
सड़े दाँत, चुंबन, हँसी
तीनों जुआरियों के चेहरे, साँसों में लोलुप दुर्गंध
अम्लीय क़ै की गंध तैर गयी पानी में
भागी जा रही है जुआरियों की नाव

देखी है जुआरियों की नाव—एक अदम्य तांत्रिक
कितनी आसानी से प्रवेश करती है समुद्र की योनि में
बंजर अस्तित्व, संख्यातीत आत्मा का स्तर
डूबा हुआ प्रेतद्वीप, शैवाल का जाल, सांकेतिक फ़ोरामिनीफ़ेरा
कोकीन में डूबी आँखें, टेढ़ी छुरी, अदृश्य तस्करों का डेरा
जुआरियों की नाव तीव्र वेग से रास्ता बनाती है
सुंदरी के नाभि कुंड के तीव्र भंवर में

श्वासरुद्ध नमकीन जल में आगे बढ़ती हुई
जुआरियों की नाव जाती है फ़ास्फ़ोरस का आह्वान जलाती हुई

देखा है आकाश के नीचे लाशों की विक्री के हाट में
अंजुरी-भर जल में, दर्शन-वाणिज्य के घाट में
श्मशान में, स्नान मुहूर्त में, सभ्यता के जंजाल में
जुआरियों की नाव शांत, चुप्पी साधे
काला पाल तानकर चमगादड़ के डैनों के आकार में
शून्यता को झुठलाती अँधेरे की ओर बढ़ती जाती है
कभी सोचा है मैं यह असह्य भयानक दृश्य और नहीं देखूंगा
महसूस करता हूँ ख़ुद को पतित और महामारी का शिकार
मज्जा, स्नायु, चैतन्यता कितने दिन भयानकता में डूबी रहेंगी
भागा हूँ अत्याचार को मिटा डालने के लिए
समुद्र-जल की रात में या मीनार के शिखर पर
या यौद्धा रेलपथ पर
समय जब लगभग छोड़कर चला गया है
हज़ारों पहियों की आवाज़ में क्षुद्र शहर के रास्ते में
विषाक्त नीले जल में
मृत्यु के फन से परे जुआरियों की नाव
तभी मैंने देखी
क्रूर लास्य में द्युतिमान दुर्लभ नरक की मणि।

अति कठिन शब्द
वेश्या के वालो
यहाँ-वहाँ चिता
पिघलते शीशे क
स्तूपाकार जैसी
विष्ठा निर्मित
आकाश के धूम
अग्निदग्धमुख,
विच्छिन्न हस्त
यौन क्रीडारत
हस्तमैथुन के व
नरक के डराव
सौंदर्य और स्व
दूकान में सजी
लहूलुहान खिल
यहाँ-वहाँ चित
हड्डी, मज्जा, ए
आर्क की रोश
लेकिन शब्दही

इस समयखंड
कोई भी स्मृति
अपरिमेय, घा
दुर्बलता समा
नींद के समुद्र
एकाकी ज्वल
भय और खि
ज्वर का दुर्ब
समय को छेद

से आंदोलित कंकाल
से उड़ती आती इत्र की गंध
ओं के पास ठिठुरता सियार
ो रोशनी में देखी जा सकती है
मृत नारियों की पोशाक
विग्रह
कुंड में समा गया है
कुष्ठ रोग का मुख, कृमि
कंठ, दो टूक हुआ कंठनाल
प्रेत, प्रेत कन्या
ाद थके हुए देवदूत पिशाच
ने कीड़ों को
स्थ्य प्रतियोगिता।
मृत शिशुओं की अर्थी
ोने, अधखाए विषाक्त फल
ा की आग में बिखरे हुए कुछ फूल
नायु के तुमुल शब्द
ी में नहाई हुई लास्य करती सुंदरी का मुख
न इसलिए कि जीभ नहीं।

में नरक की अशुभ आभा
, दूरगामी विषाद
तक
गयी है साँसों में
में दुःस्वप्न की नाव
त आरोही
खिलाती जलराशि
ध विकार
ने मे लगी सध्या की आलोक छुरी।
यका नहीं है मेरा देख

देह में शीत की चरम सावधानी लेकिन क्रमशः प्रकाशमान नग्नता
पथ पर बेहद भीड़ लेकिन क्रमश: बढ़ती दूरी
अस्तित्व का अटूट विश्वास लेकिन अनात्म। की व्याधि जैसा
अबाध फैलाव।

हे लेखक

क़लम को काग़ज़ पर फेरते हुए
आप दृष्टि को
बड़ा नहीं कर सकते
क्योंकि कोई नहीं कर सकता।

दृश्य के नीचे
जो बारूद और कोयला है
वहां एक चिनगारी
जला सकेंगे आप ?

दृष्टि तभी बड़ी होगी
लहलहाते
फूल फूलेंगे धधकती मिट्टी पर
फटी-जली चीथड़े-चीथड़े ज़मीन पर
फूल फूलेंगे।

ज्वालामुखी के मुहाने पर
रखी हुई है एक केतली
वही निमत्रण है आज मेरा
चाय के लिए।

हे लेखक, प्रबल पराक्रमी कलमची
आप वहा जायेंगे ?

शंकित कथामाला

जब भी परदेस से लौटो। वही परिचित घर
जिसके कोने-कोने में रात-भर कहानियाँ तैरती है
तब भी देखो जिस ख़ुशी में सुख पराया हो गया
उसका नाम नही है। सिर्फ़ हवा की नाव में आती है
उस देश की कोई नदी, कोई पेड़, कोई पनडुब्बी।

तुम्हारे क़रीब आकर मेरी तरह अकेला और कौन होगा
मालूम नहीं। प्रत्येक अनकही बात ने भूल की थी
पानी पर पड़ते आलोक में क्या देखा था लिखा हुआ
कुहरीले रास्ते में असमय घूमकर बाल भारी हो गये
रुदन के स्थिर जल में रेखाएँ नहीं मिलतीं हथेलियों की।

तुम्हारे जाने के साथ कौन से फूल भी चिता में जायेंगे, जूही
जिसके नशे में सर झुकाए रास्ते पर आवाजाही होती है
डगमगाते रास्ते में चिट्ठियों को काटती हैं दीमक
फिर समूचे दिन प्रेम था। बात करती हुई देह
रात के आख़िरी पहर को देखकर सोचती है मुंह ढंककर सो जाऊँ।

पता नहीं कब वह घर छोड़ चला जायेगा। उस उखड़े हुए हाट से
हाट वाले एक-एक कर लौट जाते हैं घर।
वे तुम्हारे प्रेमी सर झुकाये श्रद्धा और लज्जा से होते हैं काठ
शाम की निरुपाय हवा में धूल और बातें
तुम्हारे परदेस जाने से अनगिनत शाम के खेल के मैदान।

नारों की कविता

जलाये हुए हो या जलाऊँ आग
ख़ून का बदला समझो ख़ून
नचाने पर ही बेअदब झोंटा
लटक जाऊँगा पकड़ के टोंटा।

चूमोगे तो मिलेगा चुंबन
छुओगे तो पकड़ लूँगा दोनों हाथ से
छाया में बिठाओ धूप से
वापस कर दूँगा सपनों की रात।

याद रहे किसका क्या है दाम
कॉलर चढ़ाने पर झुकता है सर
छुरी की धारवाली चीख़ से
टुकड़े-टुकड़े हो जाती है नीरवता।

जलाये हुए हो या जलाऊँ आग
झूलूँगा पकड़कर टोंटा
नचाओ नहीं बेअदब झोंटा
ख़ून का बदला समझो ख़ून।

क्रांति के बिंब

कई एक कवि बिना पैसे के डॉक्टरी कर रहे हैं
चाँद पर छलाँग लगाने से पहले ही प्रेमी गिरफ़्तार
पुलिस गाड़ियाँ चौबीस घंटे के भीतर
स्कूल की बसें बना दी जायेंगी
आधी रात को जनविरोधी पार्टियों की लाइन
उखाड़ फेंकी जा रही है
लेटरबाक्स में चिड़ियों के घोंसला बनाने से
काम ठप
किसी सिद्धांतकार ने एक्वेरियम में बिल्ली पाली है
रेडियो कोई बजाता नहीं क्योंकि नेताओं के भाषण सुनना
अच्छा नहीं लग रहा है
बहस हो रही है पौधों और नन्हीं मछलियों पर
उदास संगीत के प्रभाव को लेकर
अब से आँसुओं से ही चलेंगी मोटर गाड़ियाँ
श्रमिकों का अभिनय करने वाले श्रमिकों के हाथों परेशान
कौन कहेगा समस्याएँ नहीं हैं हमारी इस नई व्यवस्था में
क्या ऐसा ही लगता है समाचार सुनने के बाद ?

हाथ देखने की कविता

मैं सिर्फ़ कविता लिखता हूँ
इस बात का कोई मतलब नहीं
कइयों को शायद हँसी आये
पर मैं हाथ देखना भी जानता हूँ।
मैंने हवा का हाथ देखा है
हवा एक दिन तूफ़ान बनकर सबसे ऊँची
अट्टालिकाओं को ढहा देगी
मैंने भिखारी बच्चों के हाथ देखे है
आने वाले दिनों में उनके कष्ट कम होंगे
यह ठीक-ठीक नहीं कहा जा सकता
मैंने बारिश का हाथ देखा है
उसके दिमाग़ का कोई भरोसा नहीं
इसलिए आप सबके पास जरूरी है
एक छाते का होना
स्वप्न का हाथ मैंने देखा है
उसे पकड़ने के लिए तोड़नी पड़ती है नींद
प्रेम का हाथ भी मैंने देखा है
न चाहते हुए भी वह जकड़े रहेगा सबको
क्रांतिकारियों के हाथ देखना बड़े भाग्य की बात है
एक साथ तो वे कभी मिलते ही नहीं

और कइयों के हाथ तो उड़ गए हैं बम से
बड़े लोगों के विशाल हाथ भी मुझे देखने पड़े है
उनका भविष्य अंधकारमय है
मैंने भीषण दुख की रात का हाथ भी देखा है
उसकी भोर हो रही है
मैंने जितनी कविताएं लिखी हैं
उससे कहीं ज्यादा देखे हैं हाथ
कृपया मेरी बात सुनकर हँसें नही
मैंने अपना हाथ भी देखा है
मेरा भविष्य आपके हाथ में है।

कलकत्ता

नियॉन की वेश्याओं की फ़ास्फ़ोरस छाया में
नोचती रही है एक अद्‌भुत क्रेन शहर की शिराएँ-उपशिराएँ
कल-कल बहता जा रहा है, जमता जा रहा है शहर का रक्त
एक अलौकिक भिक्षापात्र जैसा चाँद
दाँतों में पकड़कर भागता जाता है रात का कुत्ता
मैं एक निर्जन एंबुलेंस चक्कर खा रहा हूँ उद्‌भट शहर में
मेरे लिए हरी आँख का जलना या तो भाग्य है या संयोग
मैं जिसे ले जाऊँगा उसे बचा नहीं पायेगा कोई
सारी देह चीथ डाली है स्टैब-केस ने
सफ़ेद-सफ़ेद अबूझ मोहिनी नर्सों जैसे घर
इस अस्वस्थ शहर के हर मेनहोल के अंधकार में
चमक उठती है छुरियाँ
कहती हैं मेरे साहस को मांस की तरह बोटी-बोटी कर देंगी
मेरी खाल उतारकर हुक से लटका देंगी, ब्रह्मांड में गला-कटी
हालत में
मैंने भी धार दे दी है दूध के दाँतों और बघनखों में
भीषण रोष है मेरा इस रहस्य का हिस्सा देना होगा मुझे
इस तमाम बांटाबांटी के बाद मुझे रहना होगा निर्जन घर में
मुझे जकड़े रहेगी अनाथ आश्रम की आख़िरी प्रार्थना

कोई मुझे मृत घोषित करे, तब भी जीवित रहेंगे
मेरी आँखों के हीरे
लेकिन, अभी नियॉन की वेश्याओं की फ़ास्फ़ोरस छाया में
शहर की शिराएँ-उपशिराएँ नोचे दे रही है एक अद्भुत क्रेन।

पेट्रोल और आग की कविता

एक साले से मुलाकात हुई
वह खाँसता था
उससे बोला—गुरू, चलेगा ?
वह बोला—नहीं
लास्ट ट्रिप मारकर गैरेज में लौट रहा हूँ
हिम्मत नहीं है
कहकर वह चला गया खाँसते-खाँसते
वह एक डबल-डेकर बस है।

फिर देखा
दसमंज़िला एक मकान
हाथ में रबर के दास्ताने पहने
एक सड़क-छाप बच्चा
गला दबोचे है
और सारे लैंप पोस्ट
झटपट भागने की चेष्टा कर रहे हैं।

रात के गले में धारदार चांद चमक रहा है

प्लैनेटोरियम की एलेक्ट्रोनिक घड़ी में
उस समय तेज बुख़ार था
अँधेरे वियावान मैदान में
एक ट्राम हिचकोले खाती है
सहसा गुज़र गई पुलिस गाड़ी
सोये हुए कुत्तों को चौंका कर
चौकाती है रोज ही।

मुझे मालूम है
वहुत अच्छा लिखने पर भी
एक भी फाँसी को रोका नहीं जा सकता
मुझे मालूम है
ग़रीबों को डराने के लिए ही है यह सब—
लास्ट ट्रिप, खाँसी, डर लगना
झटपट करना, हल्लागाड़ी की धमक में
चौंक उठना, हिचकोले खाकर मरना
ज्वर से राख़ हो जाना
इनमें से कोई भी चीज़
रोकी नहीं जा सकती कविता लिखकर।

धूल भरे अंधड़ में
आँखें बंद कर
मैंने सीखा नहीं चलना

एक दिन पेट्रोल से
मैं बुझा दूँगा सारी आग
सारी आग मैं बुझा दूँगा
पेट्रोल से।

इश्तहार

:1:

स्याही भरने के बाद
कलम के भीतर नीला गहरा अंधकार।
दवात में स्याही कम हो गई
काग़ज़ पर अक्षर आ बैठे हैं
मेरे भीतर क्योंकि लाल स्याही है
तभी मेरी लिखावट है लाल।

:2:

मर्करी के उजाले में नीली गंजी पहने हुए दादा
चर्च लेन में लॉटरी के टिकट बेचनेवाली लड़की
पाकेट में एक बीड़ी लेकर बेहद ख़ुश गोदी मज़दूर
ये सब कलकत्ता के नाविक हैं
कलकत्ता एक युद्धपोत।

:3:

छोटी वेश्या बोली
मैं मनुष्य की पीठ पर नहीं चढ़ती
इसकी उम्र ही क्या है ?
यह सुनकर

रिक्शावाला गुस्सा हुआ
उसकी घंटी शराबियों को बुलाती है
छोटी वेश्या के गाल पर
झुककर चुंबन दे गया
रोयेंदार पाउडर के पफ़ जैसा चाँद।

: 4 :

टेलिग्राम ! ख़बर !
ज़बर्दस्त ख़बर है
सितारों की केंद्रीय समिति से
पार्टी-विरोधी कार्यकलापों के लिए
अभी-अभी एक तारा......

: 5 :

सत्याग्रही रेल कॉलोनी में
आधी रात पुलिस के हमले के बाद
सवेरे-सवेरे खेल रहा है नंगा बच्चा
उसके सिर पर पट्टी बँधी है क्यों।

: 6 :

देखो, आकाश के उठे हुए हाथ में सूरज का हथगोला
शाम ढलने पर ख़ून और धुंए के बीच से
पश्चिम में मुक्ति योद्धा
अँधेरे पहाड़ पर चले जा रहे हैं
यह देखो, सुबह का पूरब
जल रहा है झंडे के लाल रंग से
क्रांति की मृत्यु नहीं होती, जीभ काटने पर
या फांसी पर लटका देने से भी।

भावना की बात

एक रोटी में छिपी है कितनी भूख
एक जेल कितनी इच्छाओं को बंद रख सकती है
एक अस्पताल में कितने कष्ट अकेले सोते हैं
कितने समुद्र हैं एक बारिश की बूंद में
एक पक्षी मरता है
तो कितने आकाश समाप्त हो जाते हैं
एक लड़की के होंठ छिपा सकते है
कितने चुंबन
एक आँख में जाले पड़ने से कितनी रोशनियाँ
गुल होने लगती है
एक लड़की मुझे
कितने दिन अछूता बना रखेगी
एक कविता लिखकर मचाया जा सकता है
कितना कोलाहल

बर्फ़ और आग

मैं एक छोटे से शहर में जाकर
रेकॉर्ड या पैरांबुलेटर बेच सकता हूँ
मुंह पर आँसुओं का रूमाल बाँधकर मैं
बच्चों की खिलौना-रेल में डकैती कर सकता हूँ
मैं प्लेटफ़ॉर्म पर चॉक से लिख सकता हूँ
पैरों से मिट जाने वाली कविता
लेकिन दो लड़कियों से प्रेम करके
मैंने जितना कष्ट पाया था
उसे भूल नहीं सकता कभी ।

मैं अपने सीने में शब्दों का छुरा
घोंप सकता हूँ
मैं बहुत ऊँची चिमनी से सहारे चढ़कर
नीचे बॉयलर की आग में कूद सकता हूँ
मैं समुद्र में कमीज़ धोकर
पहाड़ की हवा में सुखा सकता हूँ
लेकिन दो लड़कियों को बहुत कष्ट से
मैंने इतना प्यार किया था
उसे भूल नहीं सकता कभी ।

मैं क्रुद्ध होकर सांघातिक सशस्त्र
राजनीतिक तूफ़ान खड़ा सकता हूँ
ठंढे सर की शिराएं नोचकर
तार-कटी ट्राम की तरह थम सकता हूँ
चालाकी के ब्रश से रगड़-रगड़कर
जूते की तरह चेहरे को भी चमका सकता हूँ
लेकिन उन दो लड़कियों से प्रेम करके
मेरा ख़ून वर्फ़ और आग वन गया था
इसे नहीं भूल सकता कभी।

टेलिविज़न

एक चौकोर आयतन
एक तरफ़ पर्दा
एक दैनिक ताबूत
ताबूत के भीतर
जो हंसते हैं, ख़बर पढ़ते हैं, ख़बर होते हैं
उनकी विचित्र करामातें
बहुत पसंद हैं जीते जी मरे लोगों को
एक ठंडे स्टूडियो से
मरी हुई सिने-तारिका का प्रेम
अँधेरे टावर से
भेजा जाता है
उसे देखकर बच्चे और बच्चों की माँएं
ख़ुश होती हैं।

मृतक की दूरदृष्टि
इस दैनिक ताबूत के पर्दे पर
मृत डालफ़िन का खेल
रोज़ चौकोर ताबूत के पर्दे पर
मृत्यु कितनी दूरदर्शी है
इस चौकोर बक्से के भीतर।

मृत फ़िल्मी तारिका के मांस की खोज में
कई तिलचट्टे और और एक चूहा
ताबूत में घुसकर
देखते हैं तारों और ट्रांजिस्टरों को
एक जटिल समाज व्यवस्था।

विसर्जन के लिए सुंदरवन में सोने की नाव

वह उतरा रहा है गिद्ध का अधखाया बच्चा
लकड़ी का एक लट्ठा उसे ठेलता है तिरछी रेखा में
लगता है एक असामाजिक लज्जा से औंधा
बच्चा उलट गया है नमक के पानी में
मुंह गड़ाये हुए मातला नदी की गहरी सतह में
दांड़ के हिलने से टेढ़ी चलती हुई
राहत के सामान से भरी सोने की नाव
चलती जाती है सुंदरी घाट की ओर

स्त्री की आंख की पुतलियां अंधी हैं सर्द हवा में
स्पर्श-आतुर जल झरता है उस देह मंदिर में
घिरे हुए राहत शिविर में जब बच्चों को दिये जाते हैं
संतरे और साबूदाना, बेबीफूड खाली है किसी की गोद
उस पार मोउखालि केड़खालि और कितने ही ठिकाने
मस्जिदबाड़ी की मिट्टी मिट्टी के असंख्य झोंपड़े
यह सब था गांव में अब सब है उजाड़
बांटू हॉटेनटाट और विभिन्न जातियों के लोग
वे भी खाते हैं इस रोमांटिक साइक्लोन के थपेड़े
पानी से घिरे लोग हिड़हिड़ करते हाजिर हैं दूरदर्शन के समाचार में
तालदी राहत शिविर में शीत से कांपता है उनका थरथर जीवन

डाइडोल में लटके हैं जम्हाइयाँ लेते फूले-सूजे मनुष्य
ज़रूर पहुँच गयी है ढेरों-ढेर सामान लेकर सोने की नाव

शहरी शहर में सुंदर हैं, गाँववासी सुंदर हैं बाढ़ में
समाचार में फूले हुए होंठ गोलावाड़ी लाट पर
उतरकर देखते हैं बेबाक सब कुछ लुटा हुआ
प्राण नहीं, कुछ नहीं, इसलिए समाचार
सुबह का उनींदा गिद्ध डैने झाड़ता है
चाँदनी में बच्चे को बैठा हुआ देखकर
इंद्रनाथ ने सुना उसे बुला रहा है उसका छोटा भाई

सोने की नाव के सामने अनंत शांति का एक पारावार
सड़े-बांस गले-हाड़ से भरा पानी खलबलाता है
लाट* से तट के इलाक़े तक फैले हैं कीचड़-सने घोंघे
गिद्ध के सामने एक जटिल दुरूह समस्या
गाय खाने पर जात जायेगी अगर गोद है बच्चों से भरी हुई
सोने की नाव खींचता है आँसुओं का छलछलाता ज्वार

केकड़े के बिल से सम्मोहित उठता है चाँद का चुंबक
आकर्षित जल अगर उसके गले से लगा हो क्षणिक यौन में
कछुए के विस्मय से स्तब्ध है जंगली घास की मेंड़
विस्फोटक बिंबों पर पानी लाखों दाँतों से काटता है
फटे हुए उथले ताल को
एशिया के किसी घर में ठंढ में सोते हैं जो करोड़ों लोग
मरे हुए इधर-उधर चक्कर खाते हैं, खींचतान करते हैं, कीचड़ में छिप जाते हैं
ढेर-ढेर भारी दूध-भरा धान काटते हैं पानी के हँसिये

---

* सूखी जमीन

मृत मछुआरे का जाल उसके शरीर की तरह उलझा-पुलझा है
ठहरे हुए खंडचित्र पर कितनी अच्छी लगती है सोने की नाव

तुम अगर चाहते हो पुण्य इसी लग्न में निपटा लो अंतिम संस्कार
जलकौवा आता है तारों के खिले हुए खील खाने
भूल जाओ दुख, कौन तुम्हारी माँ थी कौन था पिता
घासफूस जलाओ, मिट्टी दो, अभागी की महिमा है अपार
सुदरवन के तट पर भीगे, नमक में डूबे मनुष्यों का मिटता हुआ धुंआ
लिपटता है आसमान के हेलिकॉप्टर के चार पंखों से
जितने दुर्बल और धर्मभीरु लोग उतनी ही अपार कठोर है सजा
अंतिम सस्कार निपटाओ, फेंको वोट की रिलीफ़, कहो ये रही
तुम्हारी पुड़िया
प्रकृति की घनघटा हतबुद्धि करती है प्रभु, अभी तक
जब तक वदन पर किसी का क़फ़न न ओढ़ ले ज्वराक्रांत
वच्चा जानता है जितनी मिट्टी पड़ती है उससे कहीं ज्यादा की
जाती है दर्ज
गजमंत्री संतुष्ट है रिश्वत के ख़यालो जंगल में
कौन दल, कौन मत, कौन मोह और प्रमेह
चिढ़ाने का साहस करेगा कुलक और ठेकेदार को
इक्यासी के सुंदरवन में नियति का आविर्भाव

पागल जल की धार से कौन बचाये गाय या बकरी को
किसकी हिम्मत है भँवर से खीच ले डरे हुए वृद्ध को
फूस की छत से सरकती है फूस सरकते हैं वाँस, नीचे हैं लोग
कौन मूर्ख खोजना चाहता है लुप्त मिट हुए घर को
वह देखो राष्ट्रविज्ञानी की अर्थनीति या विकृत वौद्धिक वकवास
गमकती हुई चल पड़ी है सुंदरी वंगाल में सोने की नाव
इसी के समांतर कलकत्ता महानगर में सरकारी पर्यटन उत्सव

चलो सब झुंड बनाकर देख आयें महामति कैनिंग की क़ब्र
भाग्य की कृपा हुई तो कमरे में आ ही जायेंगे रंगीन कंकाल
या ताज़ा खोपड़ियाँ

श्मशान के क़रीब पानी होता है, पर देखा है क्या पानी का विस्तीर्ण
श्मशान

नमकीन मिट्टी देखो बाँझ की तरह हंसती है पागलों की हँसी
क्षत-विक्षत स्तन, डूबी हुई योनि, उभरे हुए नमक के पत्थर की
प्रतिमा

चारों पैर उठाये हुए बेकार गाय या नमकीन जल में डूब कर मरी
हुई मत्स्य-योजना की मछली

उथले जल में सुंदरी शिंगी की मृत्यु, राजहंसिनी जैसा नृत्य
कुछ बेवकूफ़ वही मछलियाँ खाकर चले गये हैं भूख के उस पार

इस तरफ़ के जंगली लोग पानी उतरने पर उभर आते हैं
चिंताहीन, जड़बुद्धि हैं वे, न काटते हैं न छीनते हैं न बटोरते है
सोने की नाव की ओर अपलक देखते नहीं, आश्वासन भी नहीं
सुनते

इन लोगों के बदन पर चिपकी हैं जोंकें
इन लोगों के मन पर चिपकी है जोंकें
इतने लुटे-पिटे ये लोग दूसरे मनुष्यों की तुलना में भारहीन
तीन दिन में दो सौ ग्राम चिवड़े पाकर चबाते हैं धीरे-धीरे
खट्टी खिचड़ी के बीच से तेज़ जीभ निकालता है गुप्त कॉलरा
शहर में आते है पेट भरने को पंगु बने क्रीतदास
उनमें कुछ क्रिमिनल भी है ज़रूर कई गंदे प्रस्ताव देते हैं रात में
कहते हैं इस पदस्त शृंगालवाही सोने नाव को डुबो दो गहरे
क़ब्र में डाल दो छद्म बाँध-बाँधकर, उथले पानी के इलाक़े में
टूटी दीवारों की लाट का महाजन असहाय है
दारोग़ा के आने में देरी देखकर

दिन के मोती के बाद देखो ढक्कन बंद करती है अंधी सीप
त्रिकालज्ञ हेताल पेड़ों के माथे को घेरे हुए है आरक्त पश्चिम
कीचड़-सना बाँस-हाड़ उठाओ आढ़त को नाव की मृतदेह डालते हुए
नमकीन झाग वाले जिस युवक को जगह नहीं दी सोने की नाव ने
किनारे पर अकेला वह सुनता है डीजल इंजन की डूबती हुई आवाज़
इसीलिए पैदल जाता है, उसके पैरों से टकराते है शंखचूड़ी पहने
हुए हाथ
मोतियाबिंद और कई मृतकों की कीचड़-भरी आँखों की पलकें
नदी के ज्वार से लौटता है युवक भिखारी बनकर इसी घड़ी में
बनते हैं राजपुत्र भी, मराली की मरती हुई नदी, नदी के सूखे तट
पैदल ही पार करता है जैसे कोई जीवित मूर्ति
नंगी हवा की नोक उसके बदन पर खींचती है लकीरें

फ़रार तस्करों, वेश्याओं, बुद्धिजीवियों, बनियों के शहर में
बलात्कार-दर्शन में बहुमुखी लोभी पाप और सड़न के नगर में
अकस्मात फट पड़ते हैं ढोल और नगाड़े बेवक़्त बजता है रेडियो
और किसी के रूखे, अनाथ, उछृंखल बाल बिखरते उड़ते छा जाते हैं
टी वी के पर्दे पर
पितृ-मातृहीन वह कौन पुकारता है प्रेत-आवाज़ में
भाई रे—समुद्रतट का इलाका डूब गया है
बाघ और वनदेवी युवक का हाथ पकड़
पिछली रात पगडंडियों से होकर आ गये हैं शहर में।